



0851CH01

प्रथमः पाठः



## सुभाषितानि

['सुभाषित' शब्द 'सु + भाषित' इन दो शब्दों के मेल से सम्पन्न होता है। सु का अर्थ सुन्दर, मधुर तथा भाषित का अर्थ वचन है। इस तरह सुभाषित का अर्थ सुन्दर/मधुर वचन है। प्रस्तुत पाठ में सूक्तिमञ्जरी, नीतिशतकम्, मनुस्मृतिः, शिशुपालवधम्, पञ्चतन्त्रम् से रोचक और विचारपरक श्लोकों को संगृहीत किया गया है।]

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति  
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।  
सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति नद्यः  
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ॥1॥

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः  
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।  
तृणं न खादन्नपि जीवमानः  
तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥2॥

लुब्धस्य नश्यति यशः पिशुनस्य मैत्री  
नष्टक्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः।  
विद्याफलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं  
राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य ॥3॥

पीत्वा रसं तु कटुकं मधुरं समानं  
माधुर्यमेव जनयेन्मधुमक्षिकासौ।  
सन्तस्तथैव समसज्जनदुर्जनानां  
श्रुत्वा वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति ॥4॥

विहाय पौरुषं यो हि दैवमेवावलम्बते ।  
प्रासादसिंहवत् तस्य मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसाः ॥5॥

पुष्पपत्रफलच्छायामूलवल्कलदारुभिः ।  
धन्या महीरुहाः येषां विमुखं यान्ति नार्थिनः ॥6॥

चिन्तनीया हि विपदाम् आदावेव प्रतिक्रियाः ।  
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ॥7॥



|                                 |   |                             |
|---------------------------------|---|-----------------------------|
| गुणज्ञेषु                       | - | गुणियों में                 |
| सुस्वादुतोयाः                   | - | स्वादुष्ट जल                |
| प्रभवन्ति                       | - | निकलती हैं/उत्पन्न होती हैं |
| समुद्रमासाद्य (समुद्रम्+आसाद्य) | - | समुद्र में मिलकर/पहुँचकर    |
| भवन्त्यपेयाः (भवन्ति+अपेयाः)    | - | पीने योग्य नहीं होती        |
| विषाणहीनः                       | - | सींग के बिना                |
| खादन्नपि (खादन्+अपि)            | - | खाते हुए भी                 |
| जीवमानः                         | - | जिन्दा रहता हुआ             |
| पिशुनस्य                        | - | चुगलखोर/चुगली करने वाले की  |
| व्यसनिनः                        | - | बुरी लत वाले की             |
| नराधिपस्य (नर+अधिपस्य)          | - | राजा का/के/की               |



|                                               |   |                                           |
|-----------------------------------------------|---|-------------------------------------------|
| जनयेन्मधुमक्षिकासौ<br>(जनयेत्+मधुमक्षिका+असौ) | - | यह मधुमक्खी पैदा करती/<br>निर्माण करती है |
| सन्तस्तथैव (सन्तः+तथा+एव)                     | - | वैसे ही सज्जन                             |
| सृजन्ति                                       | - | निर्माण करते हैं                          |
| वायसाः                                        | - | कौए                                       |
| वल्कल                                         | - | पेड़ की छाल                               |
| दारुभिः                                       | - | लकड़ियों द्वारा                           |
| महीरुहाः                                      | - | वृक्ष                                     |
| कूपखननं                                       | - | कुआं खोदना                                |
| वह्निना                                       | - | अग्नि द्वारा                              |

### अभ्यासः



- पाठे दत्तानां पद्यानां सस्वरवाचनं कुरुत।
- श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-  
 (क) समुद्रमासाद्य ..... ।  
 (ख) ..... वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।  
 (ग) तद्भागधेयं ..... पशूनाम्।  
 (घ) विद्याफलं ..... कृपणस्य सौख्यम्।  
 (ङ) पौरुषं विहाय यः ..... अवलम्बते।  
 (च) चिन्तनीया हि विपदाम् .....प्रतिक्रियाः।
- प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-  
 (क) व्यसनिनः किं नश्यति?  
 (ख) कस्य यशः नश्यति?  
 (ग) मधुमक्षिका किं जनयति?



(घ) मधुरसूक्तरसं के सृजन्ति?

(ङ) अर्थिनः केभ्यः विमुखा न यान्ति?

4. अधोलिखित-तद्भव-शब्दानां कृते पाठात् चित्वा संस्कृतपदानि लिखत-

|      |          |       |
|------|----------|-------|
| यथा- | कंजूस    | कृपणः |
|      | कड़वा    | ..... |
|      | पूँछ     | ..... |
|      | लोभी     | ..... |
|      | मधुमक्खी | ..... |
|      | तिनका    | ..... |

5. अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदं क्रियापदं च चित्वा लिखत-

| वाक्यानि                               | कर्ता | क्रिया  |
|----------------------------------------|-------|---------|
| यथा-सन्तः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।        | सन्तः | सृजन्ति |
| (क) निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।     | ..... | .....   |
| (ख) गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।            | ..... | .....   |
| (ग) मधुमक्षिका माधुर्यं जनयेत्।        | ..... | .....   |
| (घ) पिशुनस्य मैत्री यशः नाशयति।        | ..... | .....   |
| (ङ) नद्यः समुद्रमासाद्य अपेयाः भवन्ति। | ..... | .....   |

6. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।  
 (ख) नद्यः सुस्वादुतोयाः भवन्ति।  
 (ग) लुब्धस्य यशः नश्यति।  
 (घ) मधुमक्षिका माधुर्यमेव जनयति।  
 (ङ) तस्य मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसाः।

7. उदाहरणानुसारं पदानि पृथक् कुरुत-

यथा-समुद्रमासाद्य - समुद्रम् + आसाद्य



|                 |   |       |   |       |
|-----------------|---|-------|---|-------|
| माधुर्यमेव      | — | ..... | + | ..... |
| अल्पमेव         | — | ..... | + | ..... |
| सर्वमेव         | — | ..... | + | ..... |
| दैवमेव          | — | ..... | + | ..... |
| महात्मनामुक्तिः | — | ..... | + | ..... |
| विपदामादावेव    | — | ..... | + | ..... |

### योग्यता-विस्तारः

प्रस्तुत पाठ में महापुरुषों की प्रकृति, गुणियों की प्रशंसा, सज्जनों की वाणी, साहित्य-संगीत-कला की महत्ता, चुगलखोरों की दोस्ती से होने वाली हानि, स्त्रियों के प्रसन्न रहने में सबकी खुशहाली को आलङ्कारिक भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

पाठ के श्लोकों के समान अन्य सुभाषितों को भी स्मरण रखें तथा जीवन में उनकी उपादेयता/संगति पर विचार करें।

(क) येषां न विद्या न तपो न दानं

ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।

ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः

मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

(ख) गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।

(ग) न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।

(घ) दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्।

(ङ) न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्।

(च) उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तङ्गते तथा (उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च)।

सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

उपर्युक्त सुभाषितों के अंशों को पढ़कर स्वयं समझने का प्रयत्न करें तथा संस्कृत एवं अन्य भारतीय-भाषाओं के सुभाषितों का संग्रह करें।

‘गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति’—इस पंक्ति में विसर्ग सन्धि के नियम में ‘गुणाः’ के विसर्ग का दोनों बार लोप हुआ है। सन्धि के बिना पंक्ति ‘गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति’ होगी।

